International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 649-651

मुगल चित्रकला एवं प्रान्तीय शैलियाँ

डॉ0 केशरी नंदन मिश्र
एसो0 प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
मुगल वंश के संस्थापक बाबर की रूचि चित्रकला में थी क्योंकि उसने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' में 16वीं शताब्दी में फारस के चित्रकार जिहजाद का उल्लेख किया है जो पूर्ण के राफेल के नाम से प्रसिद्ध था परन्तु बाबर मुगल चित्रकला को प्रारम्भ नहीं कर सका। मुगल चित्रकला को प्रारम्भ करने का श्रेय हुमायूँ को जाता है अपनी अस्थायी राजधानी काबुल में उसने फारस के 2 चित्रकारों मीर सैय्यद अली व अब्दुस समद को आमन्त्रित किया था। भारत आते समय उन्हें भी अपने साथ ले आया तथा अरबी भाषा में लिखित एक पुस्तक दस्ताने अमीर हम्जा। हम्जानामा को चित्रित करने का कार्य सौंपा। मीर सैय्यद अली व अब्दुस समद ने चावल के एक दाने पर पोलों के खेल का चित्रण किया है जिसमें खिलाड़ी दर्शक आदि सभी मौजूद हैं। मुगल चित्रकला की वास्तविक शुरूआत अकबर के काल में हुई उसकी व्यक्तिगत रूचि चित्रकला में थी।

मूल शब्द : अरबी भाषा, चित्रकार, चित्रण एवं कांगड़ा।

प्रस्तावना
आइने–अकबरी में वह कहता है कि जो ''चित्रकला को पसन्द नहीं करते उन्हें मैं पसन्द नहीं करता'' अकबर ने सर्वप्रथम मीर सैय्यद अली व अब्दुस समद को दास्ताने अमीर हम्जा के चित्रण को पूर्ण करने को कहा। इसी बीच मीर सैय्यद अली फारस चला गया तब अब्दुस समद ने उसका चित्रण पूर्ण किया। अकबर ने अब्दुस समद को सीरीकलम की उपाधि दी और मुल्तान का दीवान नियुक्त किया। इसके लगभग 1400 चित्र कपड़े पर बनाये गये जिसे चित्रपट कहा गया।

प्रमुख चित्रकार
आइने अकबरी में 100 चित्रकारों का उल्लेख है जिसमें 17 प्रमुख थे उसमें भी 13 हिन्दू थे।

बसावन
यह अकबर के काल का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार था जो चित्रकला की सभी शैलियों जैसे–मानव/रुप/छवि/शबीहें, व्यंग चित्रकारी और यूरोपीय चित्रकारी में पारंगत था। इसकी प्रसिद्ध कृति मजून की आकृति हैं।

दशवन्त
आइने–अकबरी के अनुसार यह अकबरकालीन श्रेष्ठ चित्रकार था जो कहार का पुत्र था अकबर ने इसे टकसाल का प्रमुख नियुक्त किया परन्तु बाद में यह पागल हो गया और इसने आत्महत्या कर ली। इसने रज्मनामा, खानदाने तैमूरियाँ, चँगेजनामा, बाबरनामा और अनवारे, सुहेली आदि पुस्तकों का चित्रण में भाग लिया।

मिशकिन
यह यूरोपीय शैली का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार था।

अब्दुस समद
फारस का चित्रकार जिसने हमजानामा के चित्रण को पूर्ण किया। अकबर ने इसे सीरी कलम की उपाधि दी आज़ैर मुल्तान का दीवान नियुक्त किया।

मीर सैय्यद अली
फारस का चित्रकार जिसने हमजानामा के चित्रण में भाग लिया।

फारुख कलमक
इसने रज्मनामा के चित्रण में भाग नहीं लिया। केशव, लाल, मुकुन्द, तारा, सॉवल, हरिवंश, राम, माधू, जगन आदि।

चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ
अकबर कालीन चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीः–
1. इस समय चित्रकला की विषय–वस्तु मुख्यताः पुस्तकीय थी। धार्मिक चित्र भी बनाये जाते थे परन्तु लोक चित्रकला अर्थात् आम जनता के चित्रों का प्रचलन नहीं था।
2. चित्रकला पर फारसी व यूरोपीय प्रभाव था।
3. अकबर ने छवि चित्रकारी व भित्त चित्रकारी की शुरूआत की।
4. मुगलकाल में चित्रित होने वाली पहली पुस्तक दास्ताने अमीर हम्जा अथवा हम्जानामा थी।

जहाँगीर
जहाँगीर का काल चित्रकला का चर्मोत्कर्ष का काल है उसकी व्यक्तिगत रुचि चित्रकला में थी उसके पास चित्रों का एक मुरक्का (एलम्बम) थी। उसने स्वयं हेरात के अगारखा से चित्रकारी सीखी, और उसके नेतृत्व में आगरा में एक चित्रशाला की स्थापना करवायी। चित्रकला में अपनी रुचि का उल्लेख करते हुए तुजुके–जहाँगीरी मे वह लिखता है कि यदि कोई चित्र मेरे समीप लाया जाये तो मैं उसे देखकर ही बता सकता हूँ कि वह अमुख चित्रकार की कृति हैं। वह उल्लेख करता है कि एक बार टॉमस रो ने उसे एक चित्र देकर पैसा उसी प्रकार चित्र बनवाने को कहा उसने कुछ समय बाद टॉमस रो को इसी प्रकार के 6 चित्र दिये

जिसमें वह अपना मूल चित्र पहचान नहीं सका।

प्रमुख चित्रकार

मंसूर

यह जहाँगीर के काल का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार था जिसे जहाँगीर ने नादिन–उल–अस्र की उपाधि दी। इसे प्रकृति चित्रण और पशु–पक्षियों के चित्रण में महारथ हासिल थीं। इसकी कुछ प्रमुख कृतियाँ लाल फूलों की बहार, साइबेरिया का सारस और जहाज का चित्रण।

अबुल हसन

यह जहाँगीर कालीन दूसरा सर्वश्रेष्ठ चित्रकार था जो हेरात के अगारजा खाँ का पुत्र था। इसे जहाँगीर ने नादिर–उज–जमा की उपाधि दी। इसने तुजुके जहाँगीर के मुख्य पृष्ठ पर जहाँगीर के सिंहासनारोहण का चित्रण किया है। इसने 13 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद सन्त जानपाल की आकृति बनायी।

विशनदास

यह जहाँगीर के काल का सर्वश्रेष्ठ रूप या छवि चित्रकार था जहाँगीर ने इसे फारस के शासक शाह अव्वास के यहाँ चित्र बनाने को भेजा।

दौलत

इसने अपने सभी चित्रकारों के चित्र बनाये।

मनोहर

यह बसावन का पुत्र था परन्तु तुजुके जहाँगीरी में इसके भाग का उल्लेख नहीं है।

फारूख बेग

यह अकबर के काल में भी था।

मु0नादिर व मु0 मुराद

ये दोनों समरकन्ध के चित्रकार थे।

प्रमुख विशेषताएँ

जहाँगीर कालीन चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थी।

1. अब चित्रकला की विषयवस्तु पुस्तकीय नहीं रही बल्कि युद्ध, शिकार, राजदरबार के दृश्य, मनुष्यों एवं जानवरों के चित्र तथा प्राकृतिक चित्र बनाये जाने लगे।
2. चित्रकला पर से विदेशी प्रभाव कम होकर अब भारतीय प्रभाव बढ़ गया।
3. अकबर के काल में जिस रूप चित्रकारी की शुरूआत हुई थी जहाँगीर के काल में वह चर्मोत्कर्ष पर पहुँच गई।
4. इस काल में 3डी से सम्बन्धित चित्र बनाये गये परन्तु तैलीय चित्रण प्राप्त नही होता।

शाहजहाँ

शाहजहाँ की रूचि मुख्यता स्थापत्यकला में थी अतः चित्रकला में गिरवाट आयी। शाहजहाँ को दैवीय संरक्षण उसके छवि चित्रों में 'आभामण्डल' दिखायी पड़ता है। उसके समय में चित्रकला में चटकीले व भड़कीली रंगों, स्वर्ण तथा विभिन्न पत्रों में प्रयोग बढ़ने लगा। उसके समय में रेखांकन व बार्डर बनाने की विशेष हुई। उसके काल का प्रमुख चित्रकार फकीर उल्ला था। जिसे चित्रकला विभाग का अध्यक्ष बनाया गयां अन्य चित्रकारों में चिन्तारमण, विचित्र अनूपचतुर, बालचन्द्र व मीर हासिम प्रमुख थे।

औरंगजेब

औरंगजेब की रूचि चित्रकला में नही थी उसने सिकन्दरा स्थित अकबर के मकबरे वाले चित्रों को सफेद चूने से पुतवाँ दिया। फलस्वरूप अब चित्रकार प्रान्तों में चले गये और उन्होने प्रान्तीय शैलियों को मजबूत किया।

प्रान्तीय शैलियाँ

प्रान्तीय शैलियों में रामायण पुराण आज जनता से सम्बन्धित चित्र, कृष्णलीला से सम्बन्धित चित्र मुख्यता बनाये गये। प्रान्तीय शैलियों में मोटे तौर पर 2 भागों राजधानी व पहाड़ी शैलियों में विभाजित किया जाता है।

राजस्थानी शैली

इसमें मेवाड़, बूँदी, कोटा, बीकानेरी व किशनगढ़ी शैलियाँ शमिल है।

मेवाड़ शैली

इसमें लोकजीवन की झांकी, कृष्णलीला, महाकाव्यों के विषय, चित्रण के लिए चुने गये। इस शैली की शुरूआत राणा अमर सिंह के काल में हुई परन्तु इसका चर्मोत्कर्ष राणा अमर सिंह का काल था। उसके समय में मनोहर ने रामायण और शाहबद्दीन ने भागवत पुराण से सम्बन्धित चित्र बनाये। मेवाड़ शैली की प्रमुख विशेषता, ''लाल, हरे, या नीले की पृष्ठभूमि में प्रवृत्ति पुष्प व चिड़िया का अंकन है''

बूँदी शैली

इस शैली की शुरूआत सुरजन राव के समय में हुई परन्तु इसका चर्मोत्कर्ष राव रतन सिंह का काल था। जिसके समय में सुन्दर चित्र आवृत्तियाँ बड़े पैमाने पर बनाये गये। इस शैली की प्रमुख विशेषता है ''भूदृश्य रहित पहाड़ियाँ, बहती नदियाँ, रंगबिरंगे फूलों वाली घनी हरियाली''।

कोटा शैली

इसमें आश्रयदाता उम्मेद सिंह थे। इस शैली की प्रमुख विशेषता आखेट के दृश्यों का अंकन प्रमुख हैं।

बीकानेरी शैली

इस शैली पर मुगल शैली का सर्वाधिक प्रभाव है। इसका चर्मोत्कर्ष राजा अनूप सिंह का काल है। इनके समय में सुन्दर स्त्री आकृतियाँ बड़ी संख्या में बनायी गयी।

किशनगढ़ी शैली

इसका सर्वश्रेष्ठ विकास सामान्त सिंह। नागरीदास के समय में हुआ। इसके समय में राधा–कृष्ण के चित्र बड़े संख्या तो बनाये गये। इन चित्रों की वणी–ठणी कहाँ गया। सामन्त सिंह ने स्वयं को कृष्ण के रूप में चित्रित करना प्रारम्भ कर दिया। इस शैली का सर्वश्रेष्ठ चितेरा निहालचन्द्र था।

पहाड़ी शैली

पहाड़ी शैली में मुख्यता प्रकृति–प्रेम, नारी सौन्दर्य और राधा–कृष्ण से सम्बन्धित चित्र प्राप्त होते हैं। इसमें निम्न शैली, कलम शामिल है।

1. बसौली कलम– रावी नदी के तट पर स्थित बसौली (पंजाब) में राजा कृपाल सिंह के समय में इस शैली का विकास हुआ इस शैली का मुख्य विषय प्रेम है।
2. कॉगड़ा शैली–हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में इस शैली का जन्म हुआ। इस शैली का सर्वश्रेष्ठ का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार संसारचन्द्र था। इस शैली का मुख्य विषय प्रकृति–प्रेम व नारी सौन्दर्य है।
3. जम्मू शैली– जम्मू के राजा रणजीत देव और उनके छोटे भाई बलवन्तदेव के समय में इस शैली का विकास हुआ। इसका मुख्य विषय प्रकृतिक दृश्य है।
4. गहढ़वाल स्कूल– इस शैली के जन्मदाता रामनाथ व हरदास थे परन्तु इस शैली का चर्मोत्कर्ष 18वीं में भोलाराम के समय में हुआ। इस शैली में प्रकृतिक दृश्यों का मनोरम चित्रण हुआ है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुगलकालीन चित्रकला शैली काफी उन्नत दशा में थी।

सन्दर्भ

1. एस.खान – हिस्ट्री ऑफ इस्लामिक आर्किटेक्चरः दिल्ली सल्तनत मुगलत एण्ड प्रॉविन्सियल पिरीयड, सी.बी.एस. प्रकाशन, 2005
2. सतीश चन्द्रा – मेडिकल इण्डिया 3 फ्राम सल्तनत टू द मुगल, हर आनन्द प्रकाशन, 2007
3. डिर्क केलियर – द ग्रेट मुगल एण्ड दीयर इण्डिया, हे हाउस प्रकाशन, 2017
4. विलियम डार्किम्पल – द लास्ट मुगल
5. आर्थर अली – मुगन इण्डिया : स्टडीज इन पॉलिसी, आडियॉज, सोसाइटी एण्ड कल्चर, ओ0यू0वी0 इण्डिया प्रकाशन, 2008
6. आन्द्रे ट्रस्की – औरंगजेब : द मैन एण्ड द मिथ, पेग्विंन रैडंम हाउस इण्डिया प्रकाशन, 2017
7. एस0आर0 शर्मा – मुगल इम्पायर इन इण्डिया, रीड बुक्स प्रकाशन, 2007
8. शिरीज मुस्वी – पीपुल, टैक्सेशन एण्ड ट्रेड इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2007
9. वसुधा डालमिया – रिलिजियस इन्ट्रवेंशन इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2014
10. थामस एण्ड हडसन – मुगल इण्डियाः स्पेन्डर्स ऑफ द पीकॉक थ्रेन, वेलिरी बेरिस्टीन प्रकाशन, 1998